2014-15

ISSN 2320 - 4494
RNI No. MAHAUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Refereed Research Journal

VOLUME : I ISSUE IX Oct. - Dec. 2014

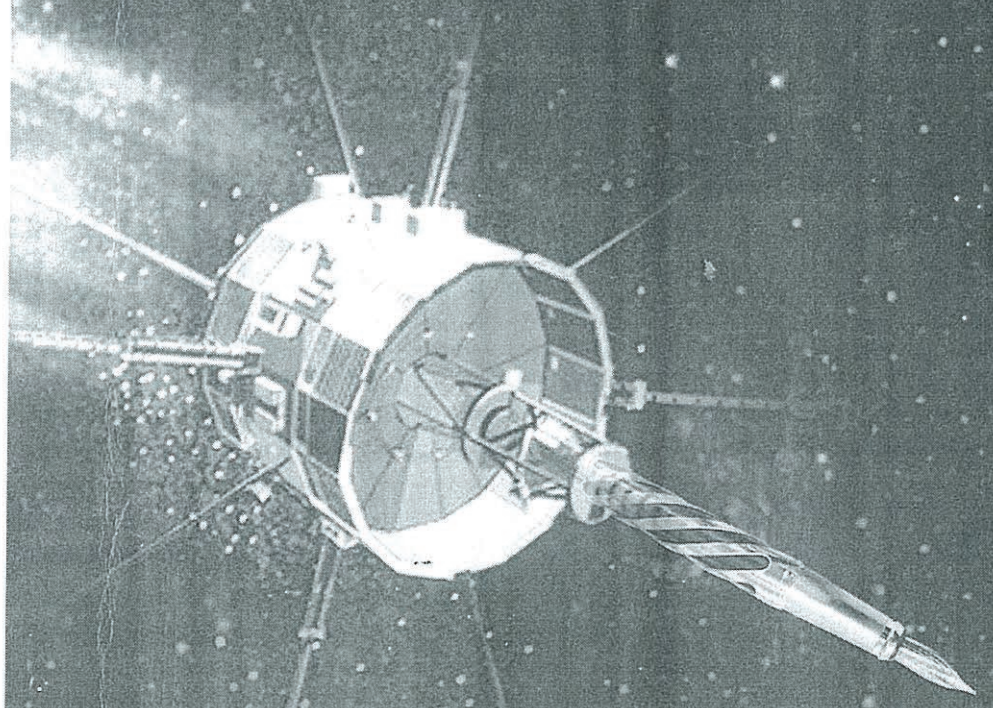

ARTS | COMMERCE | SCIENCE | AGRICULTURE | EDUCATION | MANAGEMENT | MEDICAL | ENGINEERING & IT | LAW | SOCIAL SCIENCES | PHYSICAL EDUCATION | JOURNALISM | PHARMACY

Editor

Dr. Sarkate Sadashiv

२८	दक्खिनी हिंदी का स्वरूप एवं विकास	डॉ. मिर्जा असद बेग	१०४
२९	इक्कीसवीं सदी : दलित साहित्य	डॉ. बालाजी जोकरे	१०६
३०	हिंदी दलित साहित्य में वास्तववाद का भविष्यवेध	डॉ. मीना खरात	१०८
३१	उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में मध्यवर्ग	प्रा. पोटकुले हिरा तुकाराम	११२
३२	दलित उत्पीडन की ऐतिहासिक त्रासदी का दस्तावैज जूठन'	डॉ. उषा बनसोडे	११५
३३	महानुभाव पंथाचे प्रवर्तक महात्मा चक्रधर स्वामी	व्हंदरणे करुणा त्र्यंबकराव	११८
३४	William Congreve's The Way of the world	Dr.Kuldeep K. Mohadikar,	१२२
३५	Sri Aurobindo's 'Savitri' as an Epic	Prof. Santosh D. Ghangale	१२४
३६	Images of Women in William Faulkner's The Sound and the Fury	Mr. Kivne Sandipan Tukaram	१२७
३७	BUDDHISM PERSPECTIVE IN BRUNO'S DREAM	Asst Prof. Korde Rajabhau Chhaganrao	१२९
३८	"Betrayal" by Marathi Readers and Critics: Kiran Nagarkar	Gadekar Kailas Krishna	१३२
३९	"A CASE STUDY OF WATERSHED DEVELOPMENT AREA OF KADWANCHI VILLAGE"	Shivanand T. Jadhav	१३४
४०	बीड जिल्हातील मका पिक उत्पादन व वितरण	डॉ. विष्णू सोनवणे	१३८
४१	धुळे जिल्ह्यातील स्वातंत्र संग्रामात गुजराथी समाजाचे योगदान	अनिल साहेबराव पाटील	१४१
४२	अहमदनगर जिल्ह्यातील स्वातंत्र्य सैनिक व त्यांचे योगदान	भानुदास रामदास महाजन	१४३
४३	शिवकालीन ग्राम प्रशासन	प्रा. सावंत के.डी.	१४५
४४	मंदिर ही धर्म व संस्कृती प्रसाराचे केंद्र	प्रा. चव्हाण आर. ए.	१४९
४५	सरदार वल्लभभाई पटेल आणि तत्कालीन गृह विभाग	प्रा. जाधवर बी.डी.	१५२
४६	बंजारा समाजाचा सांस्कृतिक इतिहास	डॉ. राम फुन्ने	१५६
४७	एकाकी अवस्थेतील संताजी घोरपडेची स्वराज्यनिष्ठा	प्रा. राम भोसले	१५८
४८	हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील मंठा तालुक्याचे योगदान : एक चिकित्सक अभ्यास	प्रा.डॉ. एस.के. कमळकर	१६०
४९	भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की सत्ता की स्थापना	प्रा.डॉ.शेख कलीम मोहियोद्दीन	१६३
५०	ग्रामीण विकास प्रक्रियेत संत गाडगेबाबा ग्राम स्वच्छता अभियानाची भूमिका	विठ्ठल भिमराव मातकर	१६६
५१	लिंगभाव विषमतेचा परिणाम : स्त्री-भ्रूणहत्या	प्रा. डॉ. डी. एस. नामूर्ते	१६९
५२	कृषीक्षेत्रातील विपन्नता आणि ग्रामीण कर्जबाजारीपणा	प्रा. डॉ. भगवान डोंगरे	१७४
५३	A sociological analysis of Dalit atrocities in Maharashtra: A special reference to Marathwada region 2001-2010	Mr. Samadhan Bhimrao Gaikwad	१७८
५४	PARAMETRIC ANALYSIS Nagzari sub basin Of Pedhi River	Dr. Vandana A Deshmukh	१७९

दक्खिनी हिंदी का स्वरूप एवं विकास

डॉ. मिर्जा असद बेग
हिंदी विभाग प्रमुख मिल्लिया महाविद्याय, बीड

प्रास्ताविक :-

हिंदी की अनेक बोलियाँ है उपबोलियाँ है, जिससे पश्चिमी हिंदी की मुख्य उपबोली है दक्खिनी । दक्खिनी लेखकों ने अपनी भाषा का नाम प्राय: हिन्दी लिखा है। कुछ लेखकों ने उसे दक्खिनी कहा है। दक्खिनी लेखकों ने आपनी भाषा को 'उर्दू' नाम से संबोधित नही किया कुछ लेखकों ने इसे 'रेखता' कहने की कोशिश की किंतु वे सफल नही हो सके ।

दक्खिनी के लेखकों ने अपनी भाषा का नाम 'हिन्दी' लिखा है, किंतु हिंदी के कहने से नही चल सकता इस लिए प्रदेशा के अनुसार इसका नाम 'दक्खिनी' ही अधिक उचित प्रतीत होता है। कुछ लोग 'दक्खिनी' के स्थानपर 'दक्षणी' का दक्खिनी का नही, तेलुगु, मराठी आदि भाषा ओं का बोध होगा। कुछ लोग 'दक्खिनी' के साथ हिन्दी शब्द का प्रयोग करत है किंतु दक्खिनी के साथ हिन्दी शब्द का प्रयोग करते है किंतु दक्खिनी को हिंदी का विशेषण बनाना उचित नही।[1]

अरबी लिपी में दक्खिनी का जो साहीत्य लिख गया उससे एक सुविधा हुई। अरबी में जेर-पेश के नुक्तों का ध्यान विशेष रूप से रखा जाता है जब कि फारसी या उर्दू में नुक्तों की अपेक्षा की जाती है। किंतु दक्खिनी के बहुत से शब्द संस्कृत-तद्भव या देशज है। दोनों प्रकार के शब्द फारसीया अरबी लिपि में आसानी से नही लिखे-पढे जाते। दक्खिनी को नागरी लिपि में लिखते समय इसप्रकार की कई कठिनाई है, किंतु फिर भी दो-तीन बातों पर विशेष ध्यान देना पडता है। नागरी में हम लोग क, ग और फ के नीचे नुक्ता देकर काफ गैक ओर में फे की पूर्ति कर सकते है, किंतु उर्दू के कुछ व्यंजनों के लिए हमारे पास काई चिन्ह नहीं है। दक्खिनी के दो रूप हमारे सामने आते है। एक उसका साहित्यिक रूप और दुसरा घरेलु बोलचाल का रूप। घरेलू बोलचाल में स्थानीय कारणों से बहुत परिवर्तन दिखाई देता है। औरंगाबाद- देवगिरि की भाषा में मराठीपन अधिक है, तो गुलबर्गा- बीजापूर की दक्खिनी कन्नड से अधिक प्रभावित है।

इस तरह गोलकुण्डा-हैदराबाद की दक्खिनी भी प्रथकता रखती है। मैसुर, मैद्रास ओर दक्षिण के अन्य नगरों में जो दक्खिनी बोली जाती है, वह बिलकुल प्रधक है। जब बोलियों से विकसित होते हुए दक्खिनी ने भाषा का स्थान लिया तो उसका स्वरूप बहुत परिष्कृत हो गया। साहित्यिक दृष्टि से बीजापुर तथा गोलकुण्डा की शैली बहुत अधिक प्रयुक्त हुई।[2]

दक्खिनी के तीन स्वरुप हमारे सामने आते है। उसका प्रारंभिक, स्वरूप अपभ्रंशो से संध रखता है। अपभ्रंस से पथक होकर वह घरेलु बोलचाल के काम आती रही है। बोलचाल की दक्खिनी का न तो उस समय एक रूप था ओर न आज है धीरे-धीरे गुलबर्गा- बीजापूर-गोलकुण्डा-औरंगाबाद क्षेत्र में इसे एक दक्खिनी का विकास काल कह सकते है।

इस काल में केवल उत्तर भारत से आनेवाले लोग ही नही दक्षिण भारत के मुल निवासी भी दक्खिनी में लिखते थे। हमें यह भी ध्यान रखना होगा की इसी समय हिंदी भाषी प्रदेश में आदि ओर ब्रज में उच्चकोटि का साहित्य लिखा गया ओर इस साहित्य से दक्खिनी के बोलनेवाले भी अपरिचित नहीं थे।[3]

दक्खिनी की हस्तलिखीत पुस्तकों का अध्ययन करते समय ऐसी अनेक हस्तलिखित पुस्तके प्राप्त हुई। इस पुस्ताकों में खानखाना अब्दुरहमान 'रहीम' का 'दम्पती विलास' हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद की ओर से प्रकाशित होने जा रहा है।अवधी और ब्रज के साहित्यिक रूप ने दक्खिनी के साहित्यिक रूप को प्रभावित किया । दक्खिनी

के मुल- निवासीयों की रचना में मुस्लिम लेखकों की अपेक्षा यह प्रभाव जादा दिखाई देता है। मुसलमान लेखकों ने भी इस प्रभाव को पर्याप्त मात्रा में स्वीकार किया है।..... 'सबरस' इस का आच्छा उदाहरण है। यद्यपि यहाँ के मुल-निवासीयों की भाषा तेलगु मराठी और कन्नड थी, किंतु उन्होंने दक्खिनी के बोल-चाल और सहित्यिक दोनों रूपों को आपनाया। दक्खिनी में जो स्थानीय प्रभाव दिखाई देता है वह इस बात का परिचायक है। इस संकलन में नामदेव, एकनाथ, तुकाराम और केशवस्वामी की रचना दी गई है। यद्यपि नामदेव से पहले भी कुछ लोगों ने हिंदी में लिखा है,

किंतु उनकी रचना साहित्यिक दृष्टि महत्व नही रखती। मुसलमान तथा उनके हिन्दु साथी उत्तर में दक्खिन में आए हो, किंतु नामदेव उस संक्रमण काल में ही दक्खिन से उत्तर गए थे। नामदेव ब्रज या अवधी के क्षेत्र में ना जाकर पंजाबी भाषा के क्षेत्र में आ गए वहाँ वर्षो रहकर महाराष्ट्र लौटे।

पंजाब में नामदेव के बाद जो कुछ लिख गया उसपर ब्रज का प्रभाव दिखाई देता है। यह प्रभाव नामदेव पर भी है किंतु इसी कारण नामदेव की गणना दक्खिनी के कवियों में नही हो सकती ऐसी बात नही है। दक्खिनी के कई मुस्लिम कवियों पर अरबी-फारसी का अधिक प्रभाव देखकर ही हम उन्हें दक्खिनी लेखकों के पंक्ति से बाहर नही बैठा सकते।[4]

नामदेव के पदों में दक्खिनी के सर्वनाम ओर क्रियापदों के आरंभिक रूपों का प्रयोग हुआ है। यह बात ठीक नहीं है कि दक्खिनी केवल साहित्यिक रचना ओं के लिए ही गढी थी। वह कई लाख स्त्रो-पुरूषों की मातृ-बोली थी ओर आज भी है, उसी तरह जैसे ब्रज अथवा अवधी। ब्रज और अवधी में आज साहित्य निर्माण का कार्य रूक गया है और इन दोनों भाषाओं के क्षेत्र ने खडीबोली को लिया साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यों के लिए अपना लिया है। उसी तरह दक्खिनी के क्षेत्र में उर्दू तथा हिन्दी को साहित्यिक और सांस्कृतिक भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। किंतु इस स्वीकृति से दक्खिनी मातृ-बोली नहीं बन जाती। घरों में आज भी दक्खिनी का मुल रूप बोला जाता है, यद्यपि शिक्षित घरों में वह अगर-मगर और किंतु परंतू के साथ बोली जाती है। जीवित भाषा होने के नाते उसके पास वे सब चीजें है जो किसी भाषा के पास रहनी चाहीए। दक्खिनी के अपने मुहाँवरे और कहाँवते है तथा उसके लोग गीतों की संख्या भी कम नहीं है।

आजभी कुछ लोग उर्दू-हिन्दी के साहित्य से अपनी प्यास भले ही बुझा ले किंतु लाखों नार-नारी ऐस है जो दक्खिनी की लोक कथाओं और लोकगीतों से तृप्ति प्राप्त करते है आज भी दक्खिनी के अनेक कवि और कथाकार है, चाहे हम लोगों की गिनती साहित्यिकों में करे या ना करे किंतु साधारण जनता के निकट उनका बडा महत्व है। आज भी फकीर, बाजीगार, भिक्षुक साधारण गायक दक्खिनी गीत गाते हुए सुनाई देंगे।

निष्कर्ष रूप से कहा सकात है कि दक्खिनी एक सशक्त भाषा के रूप में उभरती हुई नजर आ रही है। इस दृष्टि से साहित्यसृजन, सांस्कृतिक सिध्दों तथा संत कवियों की दृष्टि से साहित्यसृजन, सांस्कृतिक सिध्दों तथा संत कवियों की दृष्टि से दक्खिनी भाषा का महत्व अपना एक अलग महत्व रखती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. दक्खिनी का गद्य ओर पद्य- पं. श्रीराम शर्मा, पृ. क्र. 50
2. वही - पृ.क्र. 33
3. वही - पृ.क्र. 28
4. श्रेष्ठ साहित्यिक निबंध - पृ.क्र. 30